मैट्रो प्लस

Happy Diwali

निष्पक्ष एवं निर्भीक खबरों का प्रतीक

RNI No.71419/99 + 91- 98111-65707 metroplus707@gmail.com, www.metroplus.org.in Postal Regn.No.-Faridabad/259/14-16

वर्ष-17 | अंक-8 | 01-15 नवम्बर, 2015 | पृष्ठ-8 | मूल्य-2 रुपए

फिरंगियों को ही देशभक्त बना डाला खट्टर सरकार ने

नवीन गुप्ता

चंडीगढ़/फरीदाबादः आरएसएस पृष्ठभूमि से संबंध रखने वाले प्रदेश के मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर दिवाली के अवसर पर पत्रकारों को शगुन के नाम पर लक्ष्मी गणेश या देश के किसी महापुरूषों की जगह फिरंगियों की फोटो छपे चांदी के सिक्कों देकर किस प्रकार की देशभक्ति साबित करना चाहते है और ऐसा करके पत्रकारों के माध्यम से देश-प्रदेश को क्या संदेश देना चाहते है, यह समझ से परे है।

गौरतलब रहे कि मुख्यमंत्री मनोहरलाल द्वारा दिए गए इन चांदी के सिक्कों पर जार्ज वी किंग इंपीरियर तथा विक्टोरिया क्वीन जैसे उन फिरंगियों की फोटो छपी हुई है जिन्होंने कि भारतीयों को सदियों तक गुलामी की जंजीरों में जकड़ कर रखा हुआ था।

मुख्यमंत्री ने ऐसा करके अपने लिए बैठे-बिठाए एक बार फिर से आफत मोल ले ली है। पत्रकार बिरादरी में इन सिक्कों के बांटे जाने के बाद प्रदेश की सियासी राजनीति गर्मा गई है। गौरतलब रहे कि दिवाली के अवसर पर मुख्यमंत्री मनोहरलाल ने लोक सर्म्पक विभाग के माध्यम से प्रदेश के मान्यता प्राप्त पत्रकारों को फिरंगियों की फोटो छपे चांदी के सिक्के बांटे है, जिसकी पत्रकार बिरादरी द्वारा निंदा की जा रही है।

यहां यह बात भी ध्यान रहे कि पिछले कुछ समय से मुख्यमंत्री मनोहरलाल जाने-अन्जाने में कोई न कोई काम ऐसा कर रहे है जिससे कि उनकी किरकिरी हो रही है। मामला चाहे बीफ को लेकर दिया गया उनके बयान का हो, रोहतक की दो विवादास्पद बहनों को सम्मानित करने का या फिर सुनपेड़ कांड में दलित परिवार को जल्दबाजी में 10 लाख का सरकारी अनुदान देने का, इन सभी मामलों में उन्हें आलोचनाओं का शिकार होना पड़ा है।

ईमानदार नेता की छवि रखने वाले मुख्यमंत्री महोदय ने ऐसा कर जहां पत्रकारों के मान-सम्मान को ठेस पहुंचाई है वहीं विपक्षी पार्टी के नेताओं को भी घर बैठे बिठाए सरकार को घेरने का एक मुद्दा दे दिया है।

मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ बताकर फिरंगियों की फोटो छपे चांदी के सिक्कों को उन्हें भेजे जाने के बाद सवाल यह उठता है कि क्या लोकतंत्र के अन्य तीन स्तंभों विधानपालिका यानि विधायकों, न्यायपालिका यानि जजों और कार्यपालिका यानि अफसरों को भी चांदी के ये सिक्के भेजे गए हैं। अगर नहीं तो आखिर क्यों? इसका मतलब सरकार ने पत्रकारों को चांदी के सिक्कों से खरीदने का प्रयास किया है।

वैसे तो हर भारतीय कांग्रेस सरकारों को ही अंग्रेजी शासन का बदलता रूप मानते रहे हैं पर राष्ट्रवादी सोच रखने वाली भाजपा के मुख्यमंत्री ने पार्टी विचारधारा से अलग हट कर पत्रकारों को कथित तौर पर खरीदने का जो प्रयास किया है, वह वास्तव में निंदनीय है।

अब सवाल यहां यह उठता है कि क्या ये चांदी के सिक्के मुख्यमंत्री मनोहरलाल ने अपनी पसर्नल जेब से खरीदे हैं या सरकारी खजाने से। अगर अपनी जेब के पैसों से खरीदकर पत्रकारों से अपने संबंध मजबूत करने के लिए मुख्यमंत्री मनोहरलाल ने ये चांदी के सिक्के बांटे है तो इसके लिए सरकारी लोक संपर्क विभाग की सरकारी मशीनरी का इस्तेमाल क्यों किया? और यदि आम जनता के टैक्स से इकट्ठा होने वाले सरकारी खजाने से ये सिक्के खरीदे गए है तो पत्रकारों को देने के लिए क्या आपने किसी से पूछा? इसका मतलब तो मुख्यमंत्री जो मर्जी कर दे, उसे पूछने वाला कोई नहीं है।

जो भी हो, मुख्यमंत्री ने उक्त कदम उठाकर एक बार फिर से इस मामले में अपनी अनुभवहीनता का परिचय दिया है।

इस संदर्भ में जब फरीदाबाद के विधायक विपुल गोयल से पूछा गया तो उन्होंने इस मामले में अपनी अनभिज्ञता जाहिर करते हुए कुछ भी कहने से बचते रहे।

सम्पादकीय

दीपावली

दीपावली दीपों का त्योहार है। प्रतिवर्ष पूरे भारत सहित विश्व को कोने-कोने में हिन्दू धर्मावलम्बियों द्वारा इस पर्व को पूरे हर्षोउल्लास के साथ मनाया जाता है। इस त्योहार का हिन्दू धर्म में अत्यंत महत्व है। इसे प्रकाश का त्योहार भी कहा जाता है। प्रतिवर्ष आश्विन मास की अमावश्या को दीप जलाकर और पटाखे छोड़कर इसका आनंद लेते हैं।

दीपावली क्यों मनाई जाती है इसके पीछे अनेक पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं। इनमें से एक प्रसिद्ध कथा है की जब भगवान राम, रावण के वध के पश्चात अयोध्या लौटे तो वो दिन अमावश्या का था। अत: लोगों ने अपने प्रिय राम के स्वागत और अंधेरे को दूर भागने के लिए पूरे अयोध्या को दीपों से प्रज्वलित कर दिया था।

अत: ये प्रथा तब से चलने लगी। एक अन्य मान्यता के अनुसार इसी दिन धन और संपन्नता की देवी लक्ष्मी, राजा बाली के चंगुल से आजाद हुई थी। चंद कलेंडर के अनुसार इस दिन को हिन्दू कलेंडर की प्रारम्भिक तिथि अर्थात पहली तारीख भी मानी जाती है। अत: लोग इन मान्यताओं के अनुसार पूरे हर्षोउल्लास के साथ देश-विदेश के विभिन्न भागों में दीपावली मानते हैं।

दीपावली के आने से कुछ दिनों पूर्व से ही लोग अपने घरों की साफ-सफाई और रंग-रोगन के कार्य में लग जाते हैं। इसके पश्चात लोग घरों पर विभिन्न प्रकार के बल्ब और रंगीन बल्ब से अपने घर बाहर सजाते हैं। घरों में रंगोलियां बनाई जाती है। अनेक प्रकार के पकवान बनाए जाते हैं। हर घर में गणेश-लक्ष्मी की प्रतिमा बिठाई जाती है। फूलों से घरों के प्रवेश द्वार को सजाया जाता है। दुकानदार अपने-अपने दुकानों में भी पूजन करते हैं। लोगों द्वारा सहर्ष जुआ खेला जाता है। घरों को दिये जलाकर प्रकाशित किया जाता है। बच्चे-बूढ़े सभी पटाखे छोड़ते हैं। पूरा दिन और रात सुहावने होते हैं।

वैसे तो दीपावली जब भी आती है लोगों में उत्सुकता और अपने घरों को नए रूप में सजाने की बेचैनी सहज ही देखी जा सकती है, लेकिन हर वर्ष देश के विभिन्न भागों में कोई न कोई दुर्घटना जरूर हो जाती है। लोगों की नासमझी और सही तरीके से पटाखे नहीं छोड़ने के कारण कई लोग पटाखों से घायल हो जाते हैं। कई बार तो खलिहान, घरों और दुकानों में पटाखों से आग लग जाती है। बच्चों को तो सबसे अधिक खतरा होता है। पटाखों के अत्यधिक प्रयोग से वातावरण भी प्रदूषित हो जाता है।

अत: हमें पर्यावरण के अनुकूल सामग्रियों से ही इस रोचक पर्व का आनंद लेना चाहिए। पटाखों के प्रयोग के समय सावधानी बरतना चाहिए। जब भी बच्चे पटाखों का प्रयोग करेंए साथ में बड़े लोगों को उनका मार्गदर्शन करना चाहिए। हमें दिये, बत्ती और मिठाइयों के साथ जहां तक संभव हो इस पर्व को मनाने चाहिए।

-महेश गुप्ता

दीवाली मनाने के 6 रोचक तथ्य

हम दीवाली क्यों मनाते है, आखिर इसके पीछे क्या कारण है? कुछ लोगों का कहना है दीपावली के दिन अयोध्या के राजा राम लंका के अत्याचारी राजा रावण का वध करके अयोध्या वापस लौटे थे, उनके अयोध्या आने की खुशी में दीपावली का त्योहार मनाया जाता है।

दीपावली मनाने के पीछे अलग-अलग राज्यों और धर्मो में अलग-अलग कारण व्याप्त हैं। धर्म कोई भी हो मगर इस दिन सभी के मन में उल्लास और प्रेम का दीप जलता है। हम सभी अपने घरों की साफ-सफाई करते हैं, घरों में कई पकवान बनते हैं। हम आपको बताते है पौराणिक और ऐतिहासिक कुछ ऐसे रोचक तथ्यों के बारे में जिसकी वजह से न केवल हिंदू बल्कि पूरी दुनिया के लोग दीपावली के त्योहार को बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाते हैं।

भगवान राम की विजय-

हिंदू धर्म में मान्यता है कि दीपावली के दिन आयोध्या के राजा श्री राम ने लंका के अत्याचारी राजा रावण का वध किया था, वध करने के बाद वे अयोध्या वापस लौटे थे। उनके अयोध्या लौटने की खुशी में वहां के निवासियों ने दीप जलाकर उनका स्वागत किया था और खुशी मनाई थी। उसी दिन से दीपावली का त्यौहार मनाया जाने लगा।

श्री कृष्ण ने किया था नरकासुर का वध-

दीवाली के एक दिन पहले राक्षस नरकासुर ने 16,000 औरतों का अपहरण कर लिया था तब भगवान श्री कृष्ण ने असुर राजा का वध करके सभी औरतों को मुक्त किया था, कृष्ण भक्तिधारा के लोग इसी दिन को दीपावली के रूप में मनाते हैं।

विष्णु जी का नरसिंह रुप-

एक पौराणिक कथा के अनुसार भगवान विष्णु ने नरसिंह रुप धारण कर हिरण्यकश्यप का वध किया था। इसी दिन समुद्रमंथन के दौरान लक्ष्मी व धन्वंतरि प्रकट हुई थीं।

सिक्खों के लिए है खास दिन-

इस दिन सभी सिक्ख अपने तीसरे गुरू अमर दास जी का आर्शीवाद लेने के लिए इकट्ठा होते हैं। 1577 में इसी दिन स्वर्ण मन्दिर का शिलान्यास हुआ था, और इसके अलावा 1619 में कार्तिक अमावस्या के दिन सिक्खों के छठे गुरु हरगोबिन्द सिंह जी को जेल से रिहा किया गया था।

जैनियो के लिए खास दिन-

जैन धर्म में दीपावली के दिन का काफी बड़ा महत्व है, इस दिन आधुनिक जैन धर्म की स्थापना के रूप में मनाया जाता है। इसके अलावा दीवाली के दिन जैनियों को निर्वाण भी प्राप्त हुआ था।

आर्य समाज की स्थापना के रूप में-

इस दिन आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने भारतीय संस्कृति के महान जननायक बनकर दीपावली के दिन अजमेर के निकट अवसान लिया था।

इसके अलावा मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल में दौलतखाने के सामने 40 गज ऊँचे बाँस पर एक बड़ा दीप जलाकर लटकाया जाता है। वहीं शाह आलम द्वितीय के समय में पूरे शाही महल को दीपों से सजाया जाता था इस मौके पर हिन्दू और मुसलमान दोनों मिलकर पूरे हर्ष और उल्लास के साथ त्योहार मनाते थे।

इतिहास के पन्नों में दर्ज आकड़ों के अनुसार 500 ईसा वर्ष पूर्व मोहनजोदो सभ्यता में खुदाई के दौरान मिट्टी की एक मूर्ति में देवी के दोनों हाथों में दीप जलते दिखाई देते हैं। जिससे यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि उस समय भी दीपावली का त्यौहार मनाया जाता था।

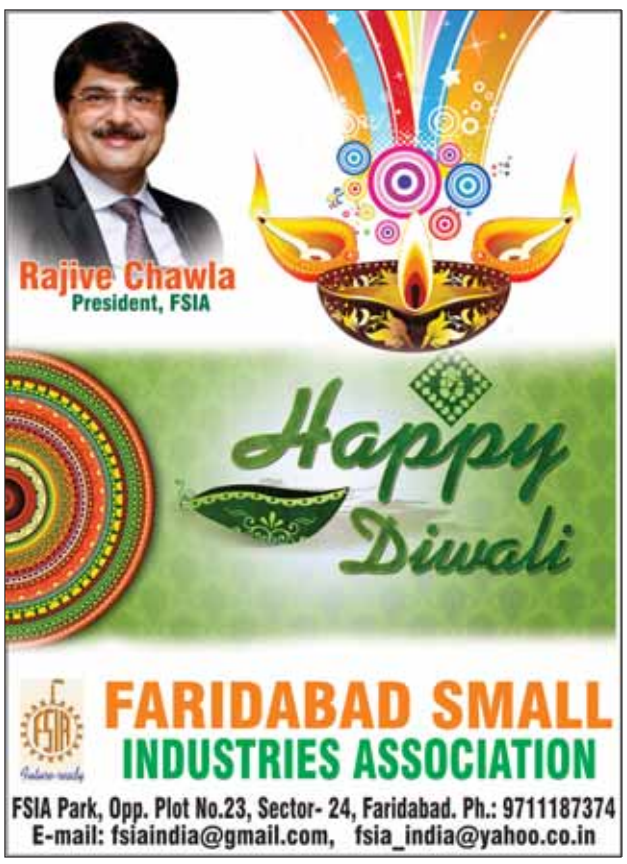

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

केसी लखानी
प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी

डा०अनिल जिन्दल
सीएमडी, एसआरएस ग्रुप

जेपी गुप्ता
चेयरमैन, क्राऊन ग्रुप

डॉ० प्रशांत भल्ला
चांसलर, मानव रचना यूर्निवसिटी

अमित गोयल
पीयूष ग्रुप

डॉ० सुमित वर्मा
मेडिचैक हॉस्पिटल

गोपाल कुकरेजा
चेयरमैन, प्रोपर्टी प्रमोशन

नानक तायल
डॉयरेक्टर, एसआरएस ग्रुप

नवीन गुप्ता
वरिष्ठ पत्रकार

नरेन्द्र परमार
शिक्षाविद् एवं समाजसेवी

एच.के. गोयल
प्रमुख समाजसेवी

परमजीत सिंह चावला
उद्योगपति एवं समाजसेवी

डॉ० सुभाष श्योराण
प्रिंसीपल, एडी सी.सै. स्कूल

देवेन्द्र गोयल
चेयरमैन, गोल्डन गेलेक्सी होटल

रो० जितेंद्र छाबड़ा
रोटरी क्लब मिड टाऊन

आरके भाटिया
होटल राजमंदिर

आर.जी. अग्रवाल
उद्योगपति एवं समाजसेवी

रो० सुरेश चन्द
शिक्षाविद् एवं समाजसेवी

वैश्य समन्वय समिति

की ओर से दीपावली हार्दिक शुभकामनाएं

जे.पी. गुप्ता
संयोजक, वैश्य समन्वय समिति

नरेन्द्र गुप्ता

एस.के. जैन

डॉ. एस.के. गोयल

अनिल गोयल

विनय गुप्ता

डॉ. राकेश गुप्ता

डॉ. अनिल जिंदल

डॉ. एस.एस. बंसल

विजय जिंदल

अरुण बजाज

राकेश गुप्ता

प्रवीण मंगला

राजकुमार अग्रवाल

संदीप गोयल

गौतम चौधरी

देवेन्द्र गोयल

पंकज गर्ग

नरेन्द्र अग्रवाल

महावीर गोयल

सुभाष गुप्ता

आर.सी. खंडेलवाल

मनोज टांटिया

पी.के. मित्तल

विनोद गर्ग

अरुण सर्राफ

पवन गुप्ता

बिजेन्द्र बंसल

जितेन्द्र मंगला

सुदेश गुप्ता

अनिल चांदीवाले

के.के. मित्तल

एम.पी. रूंगटा

एन.के. गर्ग

अरुण गुप्ता

आनंद जैन

आर.के. गोयल

रमेश झंवर

रामलाल बरार

दिव्य गुप्ता

पूरणचंद मित्तल

ईश्वर दयाल

अमित मित्तल

नितिन सिंगला

नवीन अग्रवाल

रामकिशोर अग्रवाल

सोनू गुप्ता

वेदप्रकाश बंसल

गोपाल गर्ग

अमर बंसल

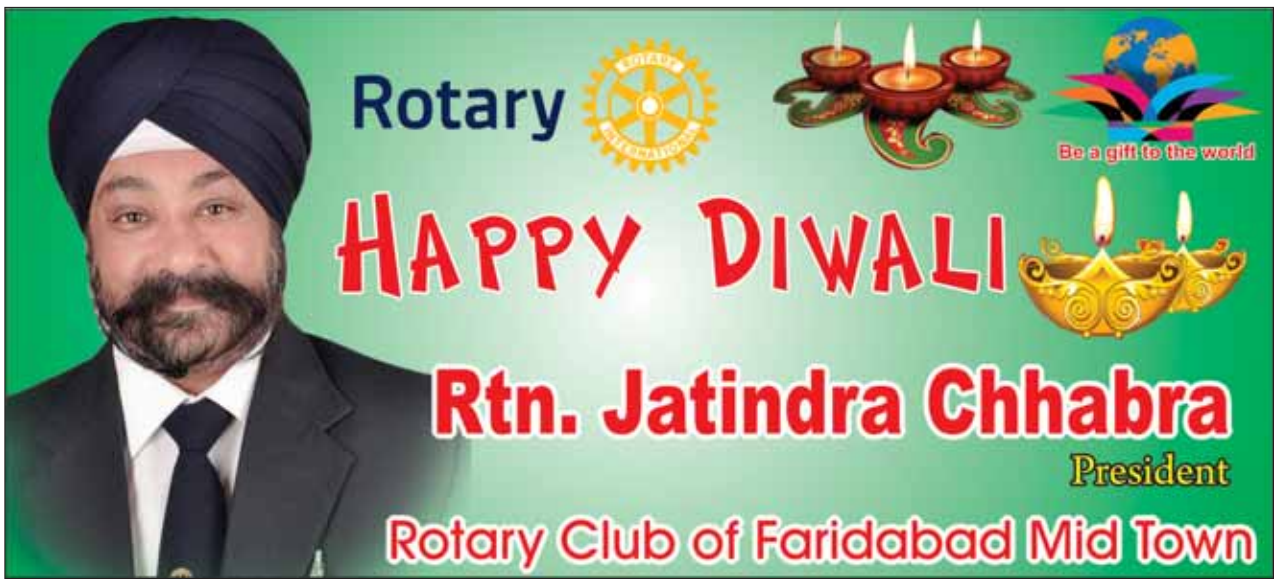

गोवर्धन पर्व पर विशेष

क्या उपेक्षा गोवर्धन पर्वत को खत्म कर रही है?

'शतायु' गोवर्धन पर्वत को गिरिराज पर्वत भी कहा जाता है। पांच हजार साल पहले यह गोवर्धन पर्वत 30 हजार मीटर ऊंचा हुआ करता था और अब शायद 30 मीटर ही रह गया है। पुलस्त्य ऋषि के शाप के कारण यह पर्वत एक मुट्ठी रोज कम होता जा रहा है। इसी पर्वत को भगवान कृष्ण ने अपनी चींटी अंगुली पर उठा लिया था। श्रीगोवर्धन पर्वत मथुरा से 22 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। पौराणिक मान्यता अनुसार श्रीगिरिराज जी को पुलस्त्य ऋषि द्रौणाचल पर्वत से ब्रज में लाए थे। दूसरी मान्यता यह भी है कि जब रामसेतुबंध का कार्य चल रहा था तो हनुमानजी इस पर्वत को उत्तराखंड से ला रहे थे, लेकिन तभी देववाणी हुई की सेतुबंध का कार्य पूर्ण हो गया है, तो यह सुनकर हनुमानजी इस पर्वत को ब्रज में स्थापित कर दक्षिण की ओर पुनरू लौट गए।

क्यों उठाया गोवर्धन पर्वत को भगवान श्री कृष्ण ने:-

इस पर्वत को भगवान कृष्ण ने अपनी चींटी अंगुली से उठा लिया था। कारण यह था कि मथुरा, गोकुल, वृंदावन आदि के लोगों को वह अति जलवृष्टि से बचाना चाहते थे। नगरवासियों ने इस पर्वत के नीचे इकठ्ठा होकर अपनी जान बचाई। अति जलवृष्टि इंद्र ने कराई थी। लोग इंद्र से डरते थे और डर के मारे सभी इंद्र की पूजा करते थे, तो कृष्ण ने कहा था कि आप डरना छोड़ दे...मैं हूं ना।

गोवर्धन परिक्रमा का महत्व:-

सभी हिंदूजनों के लिए इस पर्वत की परिक्रमा का महत्व है। वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णवमार्गी लोग तो इसकी परिक्रमा अवश्य ही करते हैं क्योंकि वल्लभ संप्रदाय में भगवान कृष्ण के उस स्वरूप की आराधना की जाती है जिसमें उन्होंने बाएं हाथ से गोवर्धन पर्वत उठा रखा है और उनका दायां हाथ कमर पर है। इस पर्वत की परिक्रमा के लिए समूचे विश्व से कृष्णभक्त, वैष्णवजन और वल्लभ संप्रदाय के लोग आते हैं। यह पूरी परिक्रमा 7 कोस अर्थात लगभग 21 किलोमीटर की है।

परिक्रमा मार्ग में पड़ने वाले प्रमुख स्थल आन्यौर, जातिपुरा, मुखार्विंद मंदिर, राधाकुंड, कुसुम सरोवर, मानसी गंगा, गोविन्द कुंड, पूंछरी का लौठा, दानघाटी इत्यादि हैं। गोवर्धन में सुरभि गाय, ऐरावत हाथी तथा एक शिला पर भगवान कृष्ण के चरण चिह्न हैं।परिक्रमा की शुरुआत वैष्णवजन जातिपुरा से और सामान्यजन मानसी गंगा से करते हैं और पुनः वहीं पहुंच जाते हैं। पूंछरी का लौठा में दर्शन करना आवश्यक माना गया है, क्योंकि यहां आने से इस बात की पुष्टि मानी जाती है कि आप यहां परिक्रमा करने आए हैं। यह अर्जी लगाने जैसा है। पूंछरी का लौठा क्षेत्र राजस्थान में आता है। वैष्णवजन मानते हैं कि गिरिराज पर्वत के ऊपर गोविंदजी का मंदिर है। कहते हैं कि भगवान कृष्ण यहां शयन करते हैं। उक्त मंदिर में उनका शयनकक्ष है। यहीं मंदिर में स्थित गुफा है जिसके बारे में कहा जाता है कि यह राजस्थान स्थित श्रीनाथद्वारा तक जाती है।

गोवर्धन पर्वत की 10 बार परिक्रमा करने वाले पलवल डोनर्स क्लब के संयोजक आर्यवीर लायन विकास मित्तल बताते है कि गोवर्धन की परिक्रमा का पौराणिक महत्व है। प्रत्येक माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी से पूर्णिमा तक लाखों भक्त यहां की सप्तकोसी परिक्रमा करते हैं। प्रतिवर्ष गुरु पूर्णिमा पर यहां की परिक्रमा लगाने का विशेष महत्व है। श्रीगिरिराज पर्वत की तलहटी समस्त गौड़ीय सम्प्रदाय, अष्टछाप कवि एवं अनेक वैष्णव रसिक संतों की साधाना स्थली रही है।अब बात करते हैं पर्वत की स्थिति की। क्या सचमुच ही पिछले पांच हजार वर्ष से यह स्वतः ही रोज एक मुट्ठी खत्म हो रहा है या कि शहरीकरण और मौसम की मार ने इसे लगभग खत्म कर दिया। आज यह कछुए की पीठ जैसा भर रह गया है। हालांकि स्थानीय सरकार ने इसके चारों और तारबंदी कर रखी है फिर भी 21 किलोमीटर के अंडाकार इस पर्वत को देखने पर ऐसा लगता है कि मानो बड़े-बड़े पत्थरों के बीच भूरी मिट्टी और कुछ घास जबरन भर दी गई हो। छोटी-मोटी झाड़ियां भी दिखाई देती है। पर्वत को चारों तरफसे गोवर्धन शहर और कुछ गांवों ने घेर रखा है। गौर से देखने पर पता चलता है कि पूरा शहर ही पर्वत पर बसा है, जिसमें दो हिस्से छूट गए है उसे ही गिरिराज पर्वत कहा जाता है। इसके पहले हिस्से में जातिपुरा, मुखार्विंद मंदिर, पूंछरी का लौठा प्रमुख स्थान है तो दूसरे हिस्से में राधाकुंड, गोविंद कुंड और मानसी गंगा प्रमुख स्थान है। बीच में शहर की मुख्य सड़क है उस सड़क पर एक भव्य मंदिर हैं, उस मंदिर में पर्वत की सिल्ला के दर्शन करने के बाद मंदिर के सामने के रास्ते से यात्रा प्रारंभ होती है और पुनः उसी मंदिर के पास आकर उसके पास पीछे के रास्ते से जाकर मानसी गंगा पर यात्रा समाप्त होती है। मानसी गंगा के थोड़ा आगे चलो तो फिर से शहर की वही मुख्य सड़क दिखाई देती है। कुछ समझ में नहीं आता कि गोवर्धन के दोनों और सड़क है या कि सड़क के दोनों और गोवर्धन? ऐसा लगता है कि सड़क, आबादी और शासन की लापरवाही ने खत्म कर दिया है गोवर्धन पर्वत को।

दीपावली पर विशेष

आखिर क्यों जलाया जाता है दीपक ?

भारतीय संस्कृति में हर धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम में दीपक जलाने की प्रथा है। ऐसी अवधारणा है कि अग्नि देव को साक्षी मानकर उसकी मौजूदगी में किए काम जरूर सफल होते हैं।

शिक्षाविद् और पलवल डोनर्स क्लब के संयोजक आर्यवीर लायन विकास मित्तल बताते है कि हमारे शरीर की रचना में सहायक पांच तत्वों में से अग्नि भी एक है। दूसरा अग्नि पृथ्वी पर सूर्य का प्रतीक है। इसलिए किसी भी देवी-देवता के पूजन के समय ऊर्जा को केंद्रीभूत करने के लिए दीपक प्रज्वलित किया जाता है।

दीपक का जो असाधाण महत्व बताया गया है, उसके पीछे मान्यता यह है कि प्रकाश ज्ञान का प्रतीक है। परमात्मा प्रकाश और ज्ञान रूप में ही सब जगह व्याप्त है। ज्ञान प्राप्त करने से अज्ञान रूपी मनोविकार दूर होते हैं और सांसारिक शूल मिटते हैं। इसलिए प्रकाश की पूजा को ही परमात्मा की पूजा कहा गया है। मंदिर में आरती करते समय दीपक जलाने के पीछे उद्देश्य यही होता है कि प्रभु हमारा मन अधंकार सें प्रकाश की ओर ले चलें। मृत्यु से अमरता की ओर हमें ले चलें। दीपक के प्रकाश से की गई प्रार्थना का उल्लेख ऋग्वेद में यूं मिलता है!

अयं कविकविषु प्रचेता मर्त्येष्वाग्निरमृतो नि धायि।
समानो अत्र जुहुररू स्हस्वरू सदा त्वसुमनसरू स्याम।।

यानी हे प्रकाश रूप परमात्मन। तुम अकवियों में कवि होकर, मृत्यों में अमृत बनकर निवास करते हो। हे प्रकाश स्वरूप तुमसे हमारा यह जीवन दुख न पाए हम हमेशा सुखी बने रहें। दीपक से हमें जीवन के ऊद्धर्वगामी होने, ऊंचा उठने और अंधकार को मिटा डालने की भी प्रेरणा मिलती है। इसके अलावा दीप ज्योति से पाप खत्म होते है।

शत्रु का शमन होता है और आयु, आरोग्य, पुण्यमय, सुखमय जीवन में बड़ोत्तरी होती है। दीपक जलाने के संबंध में कहा जाता है कि सम संख्या में जलाने से ऊर्जा संवहन निष्क्रिय हो जाता है, जबकि विषम संख्या में जलाने से सकारात्मक ऊर्जा का निर्माण होता है। दीपक की लौ के संबंध में यह मान्यता है कि इससे आयु में वृद्धि होती है। पश्चिम की ओर लौ रखने से दुख और दक्षिण की ओर लौ रखने से हानि होती है।

दीपक क्या है ?

दीपक एक प्रकार का पात्र है जिसमें रुई की बाती लगाकर घी या तेल डालकर ज्योति प्रज्वलित की जाती है। वैसे तो पारंपरिक तौर पर मिट्टी का दिया ज्योति प्रज्वलित होता है परन्तु अब धातु के दीपक भी अत्यधिक प्रचलन में हैं।

कई बड़ी-बड़ी अंधेरी गुफ़ाओं में इतनी अद्भुत एवं अत्यंत ही सुन्दर चित्रकारी मिलती है जिन्हें बनाना बिना दीपक के असंभव था। हमारे भारतवर्ष में दीपक का इतिहास प्रामाणिक रूप से (5000 वर्षों) से भी अधिक पुराना हैं। कोई भी शुभ काम शुरू करने से पहले हिन्दू धर्म में पहले भगवान के सामने दीपक प्रज्वलित किया जाता है।

दीपक जलाने के धार्मिक कारण-

दीपक को ज्ञान और प्रकाश का प्रतीक माना जाता है। दीपक को पूजा पाठ में विशेष महत्व दिया जाता है। विषम संख्या में आमतौर पर दीपक जलाने की परंपरा सदियों से चली आ रही है। पूजन के समय हमारे धर्म शास्त्रों के अनुसार दीपक जलाना अनिवार्य माना गया है। घी के दीपक से आरती करने पर घर में सुख समृद्धि आती है। घी के दीपक से आरती करने से घर में लक्ष्मी जी का स्थाई रूप से निवास होता है।

एनजीएफ रेडियो की सामाजिक संयोजिका अल्पना मित्तल बताती है कि दीपक जलाने के वैज्ञानिक कारण-

सकारात्मकता का प्रतीक दीपक को माना जाता है एवं दीपक प्रज्वलित करने से दरिद्रता दूर होती है। गाय के दूध से बनाये गये घी में रोगाणुओं को दूर करने की क्षमता अधिक मात्रा में होती है। यह गाय का घी जब भी दीपक में अग्नि के संपर्क से पूरे वातावरण को पवित्र बना देता है एवं प्रदूषण को दूर करता है।

यह मंत्र बोलि दीपक जलाते समय-

'दीपज्योतिः परब्रह्मः दीपज्योतिः जनार्दनः।
दीपोहरतिमे पापं संध्यादीपं नामोस्तुते।।
शुभं करोतु कल्याणमारोग्यं सुखं सम्पदां।
शत्रुवृद्धि विनाशं च दीपज्योतिरू नमोस्तुति।।'

जानिए नियम दीपक जलाने के -

1. पूर्व दिशा की तरफ दीपक की लौ रखने से आयु में वृद्धि होती है।
2. पश्चिम दिशा की तरफ दीपक की लौ रखने से दुख में बढ़ोतरी होती है।
3. उत्तर दिशा की तरफ दीपक की लौ रखने से धन लाभ होता है।
4. कभी भी दक्षिण दिशा की तरफ दीपक की लौ को ना रखें इससे जन या धन की हानि होती है।

आर्यवीर लायन विकास मित्तल
संयोजक
ज्योतिपूंज और
पलवल डोनर्स क्लब
09896018073

खुशी का प्रतीक हैं दीवाली

दीवाली (दीयों की अवली पंक्ति) प्रतीक हैं: खुशियों की लड़ी का। खुशी का पर्याय है सकारात्मक परिणाम। दुष्टों का दमन। पुरूषोत्तम राम जैसे व्यक्तियों का विशेष सम्मान व पूजा। हर दीवाली से पहले हमें रावण जैसे ओझे किरदारों को दशहरे के दिन खाक में मिलाने का अवसर मिलता है और पुण्यात्मा राम, लक्ष्मण, चरित्रवान सीता जैसी देवियों को याद करने का सौभाग्य प्राप्त होता है। दीपावली का त्यौहार केवल तभी चरितार्थ है जब हमें बुराई को दूर करके अच्छाई अपनाएं। लक्ष्मण जैसे भातृभाव बड़े भाई राम के लिए रखें। महिलाएं सीता रूपी चरित्र व मानसिकता अपनाएं। राम जैसे पुत्र अपने पिता दशरथ के लिए बने। राम जैसी त्यागमूर्ति, भाई भरत के लिए सिहांसन त्याग और भरत जैसे भाई द्वारा उस राजगद्दी (सिंहासन) को न धारण करना जो भाई के लिए थी। ये तमाम खूबियां इन किरदारों की हमें इस पर्व को सार्थक रूप में मनाने के लिए प्रेरित करती है। भाईचारा अमन-चैन, सुख-शांति, देवों का सम्मान, दुष्टों का दमन, त्याग, धैर्य, बुजुर्गों की बात को मानते हुए उनका सम्मान बरकरार रखना आदि गुणों को अपनाने पर ही हमें दिए जलाने का सही आनंद आ सकता है और दीवाली का त्यौहार सार्थक सिंह हो सकता है। पटाखे चलाकर प्रदूषण (ध्वनि और शोर) फैलाकर हमें इस त्यौहार की इतिश्री नहीं करनी चाहिए।

मिठाई बांटने से अभिप्राय मिठास बांटने से है। हर त्यौहार हमें कुछ सीख व सबक देता है और हमें तैयार रहना चाहिए उसे अपने जीवन में उतारने के लिए। हर वर्ष हमें ये त्यौहार में एहसास दिलाते है कि हम कितनी सिद्दत के साथ इनको मना रहे है या केवल आडम्बरों में फंसकर मूल उद्देश्य से भटक रहे है। राम-राज्य की स्थापना अगर होगी तो ही दीवाली त्यौहार का मनाना न्याय-संगत होगा। राम-राज्य में रावणों का होना न्यायोचित नहीं हैं।

-सतीश फौगाट डॉयरेक्टर
फौगाट पब्लिक स्कूल

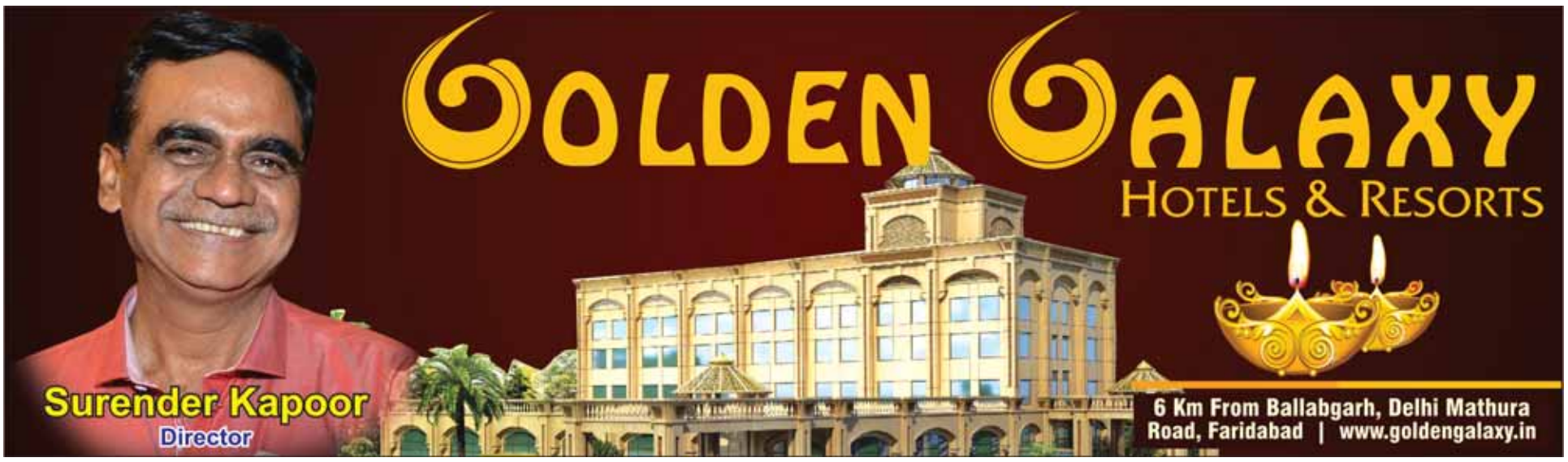
GOLDEN GALAXY
HOTELS & RESORTS
Surender Kapoor
Director
6 Km From Ballabgarh, Delhi Mathura Road, Faridabad | www.goldengalaxy.in

आप सभी को
दीपावली
भैयादूज, गोवर्धन व
छठ पूजा
की
हार्दिक बधाईयाँ
लखन कुमार सिंगला
वरिष्ठ कांग्रेसी नेता

दीपावली
की हार्दिक शुभकामनाएं
Courtesy :
SUMIT GAUR
Secretary : Haryana Pradesh Congress Committee
Former Distt. President Youth Congress
& Ex. Member Grievance Committee

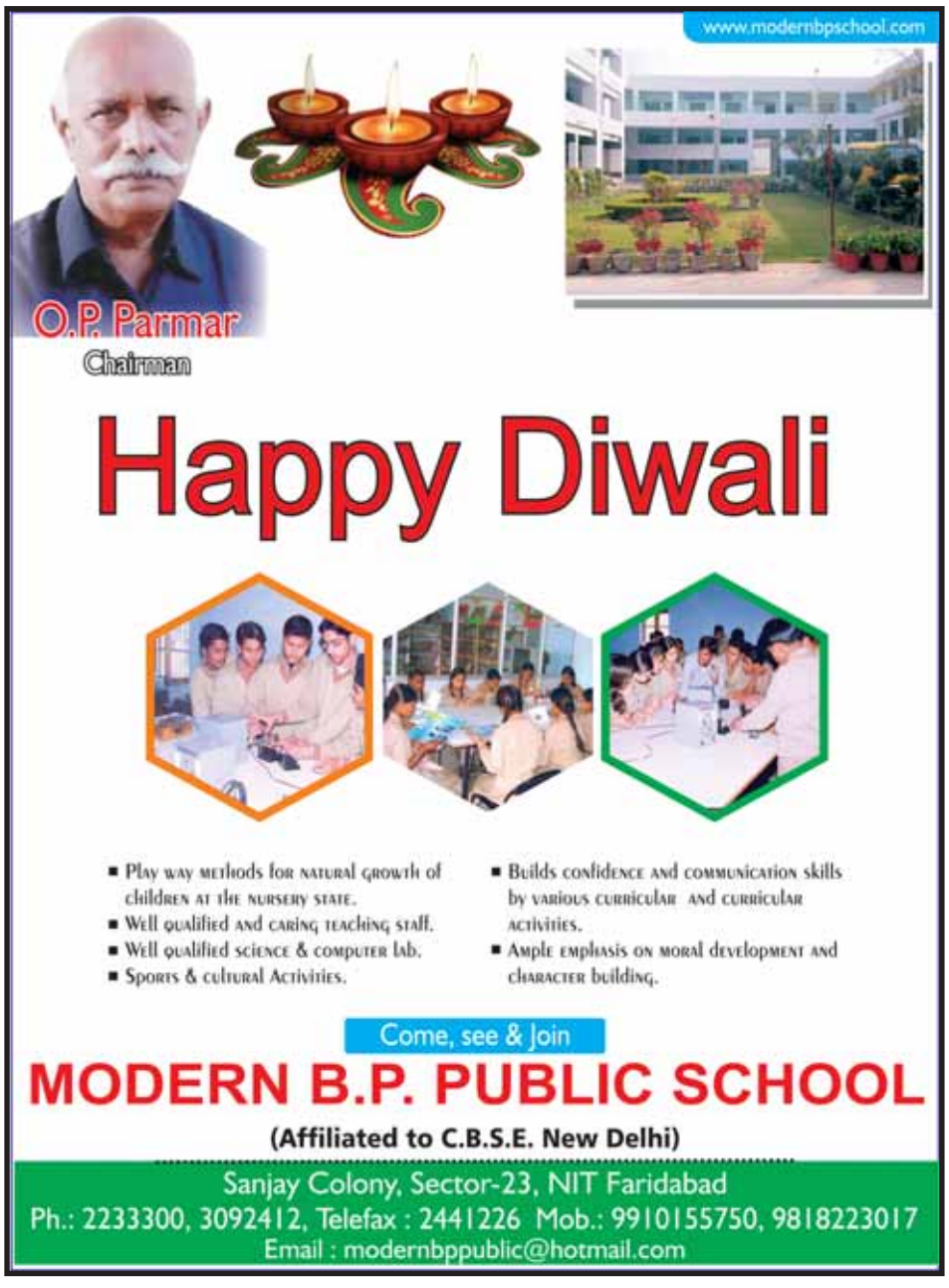
www.modernbpschool.com
O.P. Parmar
Chairman
Happy Diwali
Play way methods for natural growth of children at the nursery state.
Well qualified and caring teaching staff.
Well qualified science & computer lab.
Sports & cultural Activities.
Builds confidence and communication skills by various curricular and curricular activities.
Ample emphasis on moral development and character building.
Come, see & Join
MODERN B.P. PUBLIC SCHOOL
(Affiliated to C.B.S.E. New Delhi)
Sanjay Colony, Sector-23, NIT Faridabad
Ph.: 2233300, 3092412, Telefax : 2441226 Mob.: 9910155750, 9818223017
Email : modernbppublic@hotmail.com

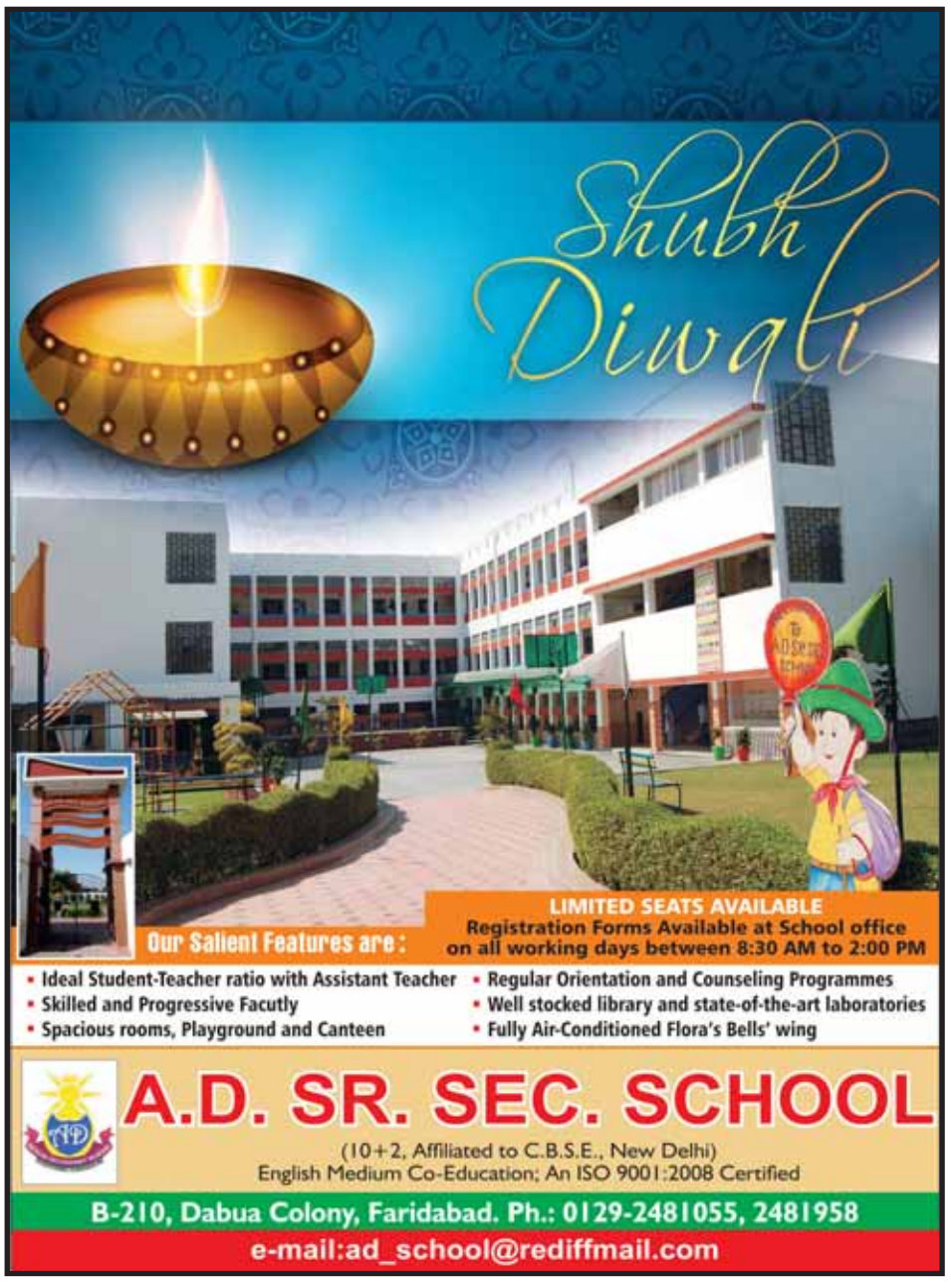
Shubh Diwali
Our Salient Features are :
LIMITED SEATS AVAILABLE
Registration Forms Available at School office on all working days between 8:30 AM to 2:00 PM
Ideal Student-Teacher ratio with Assistant Teacher
Skilled and Progressive Facutly
Spacious rooms, Playground and Canteen
Regular Orientation and Counseling Programmes
Well stocked library and state-of-the-art laboratories
Fully Air-Conditioned Flora's Bells' wing
A.D. SR. SEC. SCHOOL
(10+2, Affiliated to C.B.S.E., New Delhi)
English Medium Co-Education; An ISO 9001:2008 Certified
B-210, Dabua Colony, Faridabad. Ph.: 0129-2481055, 2481958
e-mail:ad_school@rediffmail.com

Happy Diwali

CROWN GROUP

R.S. Gandhi
Chairman

J.P. Gupta
Vice-Chairman

Dinesh Kasana
Director

Crown Group of Companies

B1/D1, Mohan Cooperative Industrial Estate,
Mathura Road, New Delhi-44. M.: 09811740909; Ph.: 011-40544700-727

स्वामित्वकारी, प्रकाशक व मुद्रक रिचा गुप्ता द्वारा ज्योति प्रिंटर्स, प्लाट न०-ई-94, सैक्टर-6, नोएडा, गौतमबुध नगर, यूपी से मुद्रित एवं कार्यालय 5डी/96 ए, मैन मार्किट, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित। संपादक: महेश गुप्ता। (सभी कानूनी विवादों का क्षेत्र फरीदाबाद न्यायालय होगा।)